प्रातः सभा 6-8-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्तिः रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। रूहानी बच्चों को ही ज्ञान का सागर कहा जाता है। यह तो बच्चों को समझाया है। बम्बई में भी बहुत सोशलवर्कर्स की मिटींग हो रही है, ऐसे ही सबको बाप समझाते हैं अभी बम्बई में जहां यह मिटींग करते हैं उसका नाम है भारत विद्या भवन। अभी विद्या होती है दो प्रकार की। एक है जिसमानी विद्या जो कालेजों, स्कूलों में दी जाती है। अभी उनको विद्या भवन भी कहते हैं जरूर वहां कोई दूसरी चीज़ है। अभी विद्या किसको कहा जाता है, यह तो मनुष्य जानते ही नहीं। यह तो रूहानी विद्या भवन होना चाहिए। इस हाल में अक्सर कर के गीता का ही ज्ञान देते हैं। वेद-शास्त्र के ज्ञान को यह विद्या कहते हैं। शास्त्रों का ज्ञान तो है भक्ति-मार्ग। भक्ति-मार्ग को विद्या वा ज्ञान नहीं कहा जाता। भक्ति मार्ग में न जिसमानी विद्या है, न रूहानी विद्या है। भक्ति को रूहानी मार्ग नहीं कहा जाता। रूहानी विद्या अथवा मार्ग एक ही होता है। विद्या को ज्ञान कहा जाता है। नालेजफुल परमपिता परमात्मा को को ही कहा जाता है। कृष्ण को तो नालेजफुल कहा नहीं जाता। शिव बाबा की महिमा ही अलग है। कृष्ण की महिमा बिल्कुल अलग है। भारतवासी मुंझ पड़े हैं। गीता का भगवान कृष्ण को समझ बैठे हैं। तो विद्या भवन आद खोलते रहते हैं। समझते कुछ भी नहीं हैं। विद्या है गीता का ज्ञान। वह ज्ञान तो है ही एक बाप में। जिसको ज्ञान का सागर कहा जाता है। मनुष्य मात्र, भल कितने भी विद्वान पंडित शास्त्र पढ़े हुये हों वह है ही शास्त्रों की भक्ति मार्ग की विद्या। उनको भक्ति की अथार्टी भी कहेंगे। भक्ति में शास्त्रों की नालेज है। आधा कल्प शास्त्रों की नालेज चली आई है। भारतवासियों का धर्म शास्त्र तो वास्तव में है ही सर्व शास्त्रमई शिरोमणी श्रीमद्भगवद्गीता। अभी भगवान किसको कहा जाये यह भी भारतवासी इस समय समझते नहीं हैं। या तो कृष्ण को कह देते, या राम को, या अपन को ही कह देते। सर्वव्यापी कुत्ते-बिल्ले सभी में भगवानकह देते। अभी तो समय भी तमोप्रधान है। रावणराज्य है ना। यह भी पत्थर नहीं समझते हैं। शिव बाबाबैठ समझाते हैं। भल उन्हों को समझाया जाये तो भी इतना समझेंगे नहीं। बुधि ही नहीं हैं। पहले तो यह समझे कि ज्ञान सागर एक ही परमपिता परमात्मा है। यह ज्ञान न देवताओं में था, न मनुष्यों में है। ज्ञान सागर एक ही है उसका नाम है शिव। शिव जयन्ति अथवा शिवरात्रि भी मनाते हैं। परन्तु किसको भी समझ में नहीं आता है। जरूर शिव आया है तब तो रात्रि मनाते हैं। शिव है कौन यह भी नहीं जानते। गाते भी हैं निराकार शिव परमपिता परमात्मा। ब्रह्मा विष्णु शंकर को भी देवता कहा जाता है। विष्णु है ल०ना० का कम्बाईन्ड रूप। उनको भगवान नहीं कहा जाता हैं। राधे कृष्ण वा ल०ना० देवता ही ठहरे। वह है नई दुनिया के मालिक। उनको भगवान तो कदाचित कहा नहीं जा सकता। बाप समझाते हैं भगवान तो सभी का एक ही हैं। सभी आत्मायें भाई2 हैं। आत्माओं का बाप एक ही है परमपिता परमात्मा। उनको ही ज्ञान सागर कहेंगे। देवताओं में यह ज्ञान ही नहीं। कौन सा ज्ञान? रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त का ज्ञान कोई भी मनुष्य मात्र में नहीं। रचयिता का ज्ञान होने से रचना के आदि मध्य अन्त का ज्ञान भी रचयिता से मिल जाता है। कहते भी हैं प्राचीन ऋषि मुनि नहीं जानते थे। प्राचीन का भी अर्थ नहीं समझते हैं। सतयुग त्रेता हो गई प्राचीन। सतयुग है नई दुनिया। वहां तो ऋषि मुनि थे ही नहीं। यह ऋषि मुनि आद सभी बाद में आये हैं। वह भी इस ज्ञान को नहीं जानते। नेती2 कह देते। हम रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त को नहीं जानते। वही नहीं जानते थे तो भारतवासी जो अभी तमोप्रधान हो गये हैं वह कैसे जान सकते हैं। इस समय सांयस का घमण्ड भी कितना है। इस सांयस द्वारा भारत समझते हैं स्वर्ग बन गया है। इनको माया का पाम्प कहा जाता है। फॉल ऑफ पाम्पिया एक नाटक भी है। अपन भी कहते हैं अस समय भारत की पतन है। फल है ना। सतयुग में उत्थान था। अभी पतन है। यह और कोई समझते नहीं हैं। यह कोई स्वर्ग थोड़े ही है। यह तो माया का पाम्प है। इनको खत्म होना ही है। मनुष्य समझते हैं विमान हैं बड़े2 महल हैं बिजलियां हैं।——

यही स्वर्ग है। कोई मरता है तो भी कहते हैं स्वर्गवासी हुआ। इससे भौपत्थर बुधि समझते नहीं। स्वर्ग गया। जरूर कोई और स्वर्ग है ना। यह तो रावण का पाम्प है। बेहद का बाप स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। इससमय है चटाभेटी माया और ईश्वर की। आसुरी दुनिया और ईश्वरीय दुनिया की। यह भी भारतवासियों को समझाना पड़े। दुःख तो अजन बहुत आने वाले हैं। अथाह दुःख आना है। स्वर्ग तो होता ही सतयुग में है। कलियुग में हो न सके। यह भी किसको पता नहीं पुरुषोत्तम संगम युग किसको कहा जाता है। यह भी बाप बैठ समझाते हैं। शास्त्रों को भक्ति कहा जाता है। ज्ञान है दिन, भक्ति है रात। अंधियारे में धक्के खाते रहते हैं भगवान से मिलने लिए। कितने वेद-शास्त्र आद पढ़ते हैं। उनको कहा जाता है भक्ति। ब्रह्मा का दिन और रात। सो ब्राह्मणों का दिन और रात। ब्रह्मण सच्चे मुखवंशावली तुम हो। वह है कलियुगी कुखवंशावली। तुम हो पुरुषोत्तम संगम युगी ब्राह्मण। यह बातें इन विचारे को जरा भी पता नहीं। यह बातें जब समझे तब बुधि में आय कि हम यह क्या कर रहे हैं। भारत सतोप्रधान था। जरूर इनको ही स्वर्ग नई दुनिया कहा जाता है। तो जरूर यह नर्क है। तब तो नर्क से स्वर्ग में जाते हैं। वहां शांतिभी है सुख भी है। ल०ना० का राज्य है ना। तुम समझा सकते हो मनुष्यों की बुधि कैसे कम हो सकती है। अशांति कैसे कम हो सकती है। अशांति है पुरानी दुनिया कलियुग में। नई दुनिया में ही शांति होती है। स्वर्ग में शांति है ना। इनको ही आदी सनातन देवी देवता धर्म कहा जाता है। हिन्दुधर्म को अभी का है। उनको आदी सनातन धर्म नहीं कह सकते। यह तो हिन्दुस्तान का नाम है। वास्तव में हिन्दुधर्म भी है नहीं। आदी सनातन देवी देवता धर्म था। वहां कम्पलिट पवित्रता सुख शांति हेल्थ वेल्थ सभी था। अभी पुकारते हैं हम पतित हैं। हे पतित पावन आओ। अब प्रश्न है पतितपावन कौन है। कृष्ण को तो नहीं कहेंगे। पतित पावन परमपिता परमात्मा ही ज्ञान का सागर है। वही आकर पढ़ाते हैं। ज्ञान को पढ़ाई कहा जाता है। अभीभारत विद्या भवन बहुत ही गीता पाठी आते हैं। बड़े2 अथार्टी वाले। वह उन्हों का पढ़ना ता आया कल्प से चला आया। परन्तु वह सभी है शास्त्रों का नालेज। बाप तो रूहानी नालेज देते हैं। भक्ति के शास्त्र आद से तो कुछ भी नहीं मिलता। जिसमानी नालेज फिर भी सोर्सआफ इनकम है। शास्त्रों की नालेज से कुछ भी सोर्सआफ इनकम नहीं। बाप तो राजयोग सिखाये राजाओं का राजा बनाते हैं। गीता जो सुनाते हैं उनको भी इनकम नहीं होती। गीता सुनते2 सीढ़ी नीचे ही उतरते गये हैं। सारा मदार है गीता पर। अब तुमप्रदर्शनी म्युजियम बनाते होपरन्तु अब तब ब्रह्माकुमारियां का भी अर्थ नहीं समझते हैं। यह समझते हैं यह कोई नया धर्म है। ~~लेम=समझते=हैं~~ सुनते हैं परन्तु समझते कुछ भी नहीं हैं। बापने कहा है कि बिल्कुल ही तमोप्रधान पत्थर बुधि है। भल सायंस घमण्डी बहुत बन गये हैं परन्तु है पत्थर बुधि। सायंस से ही अपना विनाश कर देते हैं तो पत्थर बुधि कहेंगे ना। पारस बुधि थोड़े ही कहेंगे। बम्स आद बनाते हैं अपने ही विनाश के लिए। ऐसेनहीं शंकर विनाश करता है। अपने विनाश के लिए यह सभी चीजें बनाई हैं। परन्तु तमोप्रधान पत्थर बुधि यहसमझते नहीं हैं। जो कुछ बनाते हैं सो इस पुरानी सृष्टि के विनाश के लिए। विनाश हो तब तो फिर नई दुनिया की जयजयकार हो। वह समझते हैं स्त्रीयों का दुःख कैसे दूर करेंगे। परन्तु मनुष्य थोड़े ही किसका दुःख दूर कर सकता है। दुःख हर्ता सुख कर्ता तो एक ही बाप को कहेंगे। देवताओं को भी नहीं कहेंगे। कृष्ण भी देवता हो गये। उसको भगवान नहींकह सकते। यह बातें तुम ब्राह्मण ही समझते हो और औरों को समझाते रहते हो। जो राजपद अथवा आद सनातन देवी देवताधर्म के हैं वह निकल ही आते हैं। यह सूर्यवंशी चन्द्रवंशी धर्म की स्थापना हो रही है। मनुष्यों को थोड़े ही मालूम है ल०ना० स्वर्ग के मालिक कैसे बने। ऐसे क्या कर्म किया जो विश्व के मालिक बनेंगे। इस समय कलियुग अन्त में तो अनेकानेक धर्म हैं। अशान्ति तमोप्रधान है। नई दुनिया में ऐसे थोड़े ही होता है। अभी यह है संगम युग। जब कि बाप आकर राजयोग सिखलाते हैं। बाप ही कर्म अकर्म विकर्म की नालेज आकर समझाते हैं। आत्मा शरीर लेकर कर्म करने आती है। सतयुग में जो कर्म करते हैं वह अकर्म हो जाता है। वहां विकर्म होता ही नहीं। दुःख होता ही नहीं। कर्म अकर्म विकर्म की गति बाप कहते हैं मैं ही आकरअन्त

सुनाता हूं। मैं इनके बहुत जन्मों के अन्त में भी अन्त में आता हूं। इस रथ में प्रवेश करता हूं। अकालमूर्त आत्मा का यह रथ है। सभी मनुष्य अकाल तख्त है। एक अमृतसर में अकाल तख्त नहीं होता है। वह अर्थ नहीं समझते हैं कि आत्मा अकाल मूर्त है। यह शरीर डोलता चालता है। अकाल आत्मा का यह चैतन्य तख्त है। अकालमूर्त तो सभी हैं। बाकी काल शरीर को खा जाता है। आत्मा तो अकाल है। तख्त को खलास कर देते हैं। सतयुग में बहुत नहीं होते हैं। इस समय तो 500करोड़ आत्माओं के तख्त हैं। आत्मा ही तमोप्रधान बनी है फिर बाप समझाते हैं तमोप्रधान से सतोप्रधान कैसे बनेंगे। मैं तो स्वयं सतोप्रधान पवित्र हूं। भल लोग कहते हैं कि प्राचीन भारत का योग, परन्तु वह भी समझते हैं कि कृष्ण ने सिखाया था। कृष्ण का नाम दे गीता को ही खण्डन कर दिया है। गीता खण्डन होने से भारत खण्ड बन गया है। जीवनकहानी में हा नाम बदल लिया है। बाप के बदल बच्चे का नाम डाल दिया है। पूरा 84 जन्म लेने वाला वह फिर भगवान कैसे हो सकता। शिवरात्रि मनाते भी हैं परन्तु वह कैसे आते हैं यह जानते नहीं हैं। शिवहै ही परमआत्मा। उनकी महिमा बिल्कुल अलग है। आत्माओं की महिमा बिल्कुल अलग हैं। लोगों को यह भी पता नहीं है कि राधे कृष्ण ही ल०ना० है। ल०ना० के दो रूप को ही विष्णु कहा जाता है। फर्क तो है नहीं। ब्रहमा विष्णु शंकर भी देवतारं हो गये। राधे कृष्ण तो है प्रिन्स प्रिन्सेज दोनो अलग2 घर के थे। वह ल०ना० के कम्बाईन्ड रूप है विष्णु। बाकी चार भुजा वाला कोई मनुष्य होता नहीं हैं। देवियों आद को कितनी भुजारं दे रखी है। यह बातें समझने में ही समय लगता है। पहले तो इन्हों को मालूम पड़े कि गीता खण्डन होने से ही सब शास्त्र खण्डन हो जाते हैं। भारत की क्या दुर्गति हो गई है। स्वर्ग में भारत कितना अच्छा था। हेल्थ वेल्थ एण्ड हैपीनेस सब थी। अभी तो कुछ भी नहीं हैं। भक्ति को दुर्गति और ज्ञान को सदगति ही कहा जाता हैं। यह बातें जब कि कोई समझे तब उनकी बुधि में बैठे। बाप कहते हैं मैं हूं गरीब निवाज। मैं आता हूं जब कि भारत गरीब बन जाता है। अब भारत पर राहू का ग्रहण बैठा है। सतयुग में बृहस्पत की दशा थी। अब राहु का ग्रहण भारत पर तो क्या सारी दुनिया पर है। इस लिए बाप फिर भारत में ही आते हैं। आकर नई दुनिया की स्थापना कराते हैं। जिसको ही स्वर्ग कहा जाता है। भगवानुवाच कि मैं इस राजयोग द्वारा तुमको राजाओं का राजा डबल सिरताज स्वर्ग का मालिक बनाता हूं। 5000वर्ष हुआजब कि आदी सनातन देवी देवता धर्म था। अभी वह है नहीं। तमोप्रधान हो गये हैं। बाप खुद ही अपना अर्थात रचयिता और रचना का परिचय देते रहे हैं। तुम्हारे पास प्रदर्शनी अथवा म्युजियम में कितना आते हैं। समझते थोड़े ही हैं। कोई बिरले ही समझकर और कैर्स लेते हैं। रचयिता को रचना को जानते हैं। रचयिता है बेहद का बाप। उन से बेहद का वरसा मिलना है। यह नालेज बाप ही देते हैं फिर राजा मिल जाती है तो वहां नालेज की दरकार नहीं रहती है। सदगति कहा जाता है नई दुनिया स्वर्ग को। दुर्गति कहा जाता है पुरानी दुनिया नर्क को। बाप समझाते तो रहते हैं। बच्चों को भी ऐसा समझाना है। ल०ना० का चित्र दिखाना है। यह विश्व में शांति स्थापन हो रही है। आदी सनातन देवी देवता धर्म का फाउन्डेशन है नहीं जो बाप स्थापन कर रहे हैं। बाकी हिन्दु तो कोई धर्म ही नहीं। देवी देवताओं का पवित्र धर्म पवित्र कर्म था। अभी यह है ही विकारी दुनिया। नई दुनिया को कहा जाता है निर्विकारी दुनिया शिवालय। यह भी समझाना पड़े। तो बिचारों का कुछ कल्याण हो। कल्याणकारी बाप को ही कहा जाता है। वह आते ही हैं पुरुषोत्तमसंगम युग। कल्याणकारी युग में बाप आकर सभी का कल्याण करते हैं। पुरानी दुनिया को बदल नई दुनिया स्थापन कर देते हैं। ज्ञान से सदगति भक्ति से दुर्गति होती है। इस पर सैंपल टाईम लेकर समझा सकते हैं। बोलो रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त को हम ही जानते हैं। यह गीता का एपीसुड ही चल रहा है। जिसमें भगवान ने आकर राजयोग सिखाया है। डबल सिरताज बनाया है। कल्प की आयु 5000 है। ब्रहमाकुमारी पहले से ही बता हैं कि 5000वर्ष है। जरूर किसके समझाने से कहा है। हम भी कल लाखों वर्ष का कल्प समझते थे। शास्त्र पढ़ते थे। अभी समझते हैं वह तो सभी भक्ति के शास्त्र हैं। जो जाती भक्ति करते हैं उनको ही बापभक्ति क

फल देते हैं। बाप वरसा देते हैं रावण सराप देते हैं। अभी भारत पतित है। सरापीत है। बर्थ नाट अपनी है। किसने सराप दिया है रावण ने। फिर बाप आकरवरसा देते हैं। अब दे रहे हैं। इन=बातों= बातों को समझाना है। पवित्रता ही मुख्य है। बाप ने कहा है काम ही महाशत्रु है। इस पर जीत पाने से जगत जीत बनेंगे। यह ल०ना० जगत जीत है ना। हम भी पहले पापात्मा थे। अभी निर्विकारी बन विकारों पर जीत पहन जगत जीत बने हैं। यह भी इस राजयोगसे बने हैं। इस पुरुषोत्तम संगम युग पर श्रीमत पर यहराजयोग सीखते हैं। बाप कहते हैं मुझे याद करने से ही पावन बनेंगे। समझाते तो बहुत हैं। परन्तु सब नहीं समझते हैं। इसलिए गायन भी है कोटों में कोऊ। हां इतना कहेंगे इन्हींकी नालेज अच्छी है। जादू आद की बात नहीं। भाईबहन बनाते हैं। तुम तो कहते हो हम भाई2 हैं। ईश्वर के सब सन्तान भाई2 हो गया ना। फिर प्रजापिता ब्रह्मा के औलाद बहन भाई ठहरे। बस और कोई सम्बन्ध नहीं। फिर सतयुग में सम्बन्ध थोड़ा बढ़ता है। एक बच्चा होता है सो भी योगबल से। यहां तो देखो कितना सम्बन्ध बृधि को पाता रहता है। कितना विकार में फंसे हुये रहते हैं। कलियुग को कहा ही जाता है विषस दुनिया। माताओं ने ही स्वर्ग के द्वार खोले हैं। सन्यासी कहते हैं मातारं नर्क का देवार है। बाप कहते हैं यह मातारं ही स्वर्ग की दंवार खोलते हैं। स्वर्ग को सुखधाम कहा जाता है। मन्मनाभव और मद्याजीभव। मन्मनाभव अर्थात शान्तिधाम को याद करो। मद्याजीभव माना सुखधाम को याद करो। यह भगवान के महावाक्य है न कि कृष्ण के। भगवान को शिव कहा जाता है। यह तो शरीरधारी है। इनका नाम है ब्रह्मा। इनको हम दादा कहते हैं। ब्रह्मा शिव बाबा का बच्चा है। वह है बाप शिव। यह दादा ब्रह्मा। इनका यह बहुत जन्मों के अन्त का जन्म है। यह उनका रथ है। जिस रथ द्वारा बाप बैठनालेज देते हैं। बाकी गीता में जो घोड़े गाड़ी आद बैठ दिखाई वह सभी हैं झूठ। गीता में कुछ अक्षर ठीक है। बाकी तो झूठ हीझूठ है। समझाने वाली भी अच्छी बच्ची चाहिए। सुनते तो तुम सभी हो। फिर भूल जाते हो। क्योंकि अन्तर्मुख तो कोई नहीं। सभी है बाहरमुखी। बाप समझा रहे हैं तो भी बम्बई के बच्चों को याद कर समझा रहे हैं क्योंकि वहां सर्विस कर रहे हैं। म्युजियम वा प्रदर्शनी में तुम कितना समझाते हो परन्तु समझते थोड़े ही है। पत्थर बुधि तमोप्रधान है ना। अभी तुम समझते हो आदी सनातन देवी देवता धर्म का सेपलिंग लग रहा है। देवी-देवता धर्म बहुत हिन्दुधर्म में चले गये हैं। यह है अपवित्र धर्म। वह है आदी सनातन पवित्र देवी देवता धर्म। कितना फर्क है। विश्व सुखशान्ति थी तो पारस बुधि थी। अभी है पत्थर बुधि। कितनी अशांति है। सीढ़ी पर भी अच्छी रीत समझानी चाहिए। कैसे भक्ति से दुर्गति होती है। फिर बाप आकर सदगति देते हैं। हाहाकार के बाद होगी जयजयकार। तुम चाहते भी हो विश्व में जयजयकार हो जायेगी अभी होना है। तुम्हारे भी सब की बुधि में यह धारण नहीं होती। क्योंकि अन्तर्मुखी कोई मुश्किल बनते हैं। कहते हैं हम विश्व में शान्ति स्थापन कर रहे हैं परन्तु खुद ही अशांत है। वह क्या शान्ति स्थापन करेंगे। वहक्या वरसा पावेंगे। अपन को साहबजादे समझे तो वह नशा चढ़े। अपने दिल से पूछना है। अच्छा। इस समय कोई भी सम्पूर्ण नहीं बने हैं सभी पुरुषार्थी हैं। यह दादा भी कहते हैं मैं पुरुषार्थी हूं। स्टुडन्ट लाईफ में हूं। पढ़ाने वाला एक ही निराकार परमात्मा है बाकी सभी हैं देहधारी मनुष्य। बाबा बार2 कहते हैं अपन को आत्मा समझो। बाप को याद करते रहो। मैं आत्मा हूं। बाप का बच्चा हूं। यह अन्दर में पक्का याद करना है। अजपा जाप मुख से जपन नहीं है। पहले2 अपनको आत्मा समझो तो बाप याद आवेगा। देहअभिमान में आने से लनुपानी होते हैं। अपना ही अकल्याण कर बैठेंगे। टीचर को भी अपना अहंकार न रहना चाहिए। प्यार से सभी की सम्भाल करनी चाहिए। तो वह भी खुशहोंगे। सर्विस में मदद करेंगे। नहीं तो हैं होते रहेंगे। गुण भीधारण करना है। बार्ट रखने से तुमको सभी मालूम पड़ेगा। बाप जानते हैं जो कल्प पहले हुआ था वही होताहेगा। साक्षी हो देखते रहते हैं। कोई समय किस में भूत आता है तुम चुप कर बाप की याद में रहेंगे तो भूत भाग जावेगा। मूल बात है मन्मनाभव। मामेकम याद करो तो भूत भागे जावेंगे। बाप तो भूतों को भगवाने आये हैं। मैं आकर पावन बनने का रास्ता बताता हूं। अंधों की लाठी बन रास्ता बताने आया हूं। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग आरनमस्ते।